



# STUDY OF THE EFFECT OF EDUCATIONAL ACHIEVEMENT ON ADJUSTMENT OF B.ED PUPIL TEACHERS

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक-उपलब्धि पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन

Bharti Rawat<sup>1</sup> | Dr. Anoj Raj<sup>2</sup>

<sup>1</sup> Research Scholar, Himgiri Zee University, Dehradun.

<sup>2</sup> HOD and Associate Dean, Edu. Dept. Himgiri Zee University, Dehradun.

## ABSTRACT

The purpose of present research is to see the effect of dimension of adjustment on the B.Ed pupil teachers and its educational achievement. Dimension of adjustment are Home, Health, Social, Emotional and Educational Adjustment applied in this research for which A.K.P.Sinha and R.P.Singh Adjustment Inventory For College Students (AICS). For sampling in Dehradun Dist. four B.Ed Institutes were selected by Random method. Use of Mean, Standard Deviation and T-Value was used for data analysis. The finding of the present study reveal that educational achievement and total adjustment differ between male and female pupil teachers but they don't differ in dimension of adjustment.

**KEYWORD:** Educational Achievement, Adjustment

### प्रस्तावना—

शिक्षा वह सशक्त हथियार है जिसके माध्यम से हम सर्वशक्तिमान, बुद्धिमान, ज्ञानवान बन सकते हैं। इसके द्वारा हम जिन्दगी में ऊँचे मुकाम को हासिल कर एक बेहतर जीवनयापन सकते हैं और अपनी आने वाली जिन्दगी को संवारने के साथ-साथ दूसरों की जिन्दगी भी संवार सकते हैं। शिक्षा का प्रमुख कार्य व्यक्ति को समाज के अनुरूप समायोजन करने योग्य बनाना है। शिक्षा ग्रहण करने का मुख्य स्रोत विद्यालय है जहाँ विद्यार्थी समायोजन करने की प्रक्रिया को सीखता है। कहा जा सकता है कि अच्छे समायोजन वाला व्यक्ति भविष्य में सफल होता है और वह स्वतंत्र विचार और आत्मविश्वास से पूर्ण होता है। शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों का स्वतंत्रतापूर्वक विकास करे, जिससे वह अपने आस-पास के वातावरण को समझ सकें और अपने आप को समायोजित कर सकें तथा आस-पास के वातावरण को बदलने की क्षमता को विकसित करे जिससे वह जड़बुद्धि होकर अंधेरे में खोकर ना रह जाए।

शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को जीवन के कठोर यथार्थपरक और जटिल समस्याओं का सामना करना सिखाना चाहिए ताकि विद्यार्थी जीवन के स्पंदन को महसूस कर सकें और तमाम तरह के सवालों को समझने और परखने योग्य बन सकें। भगवान ने समायोजन की अद्वितीय क्षमता मनुष्य को प्रदान की है जिसके द्वारा मनुष्य अपने आप को जानता और समझता है जिससे वह समाज में अपनी जगह बनाकर रहता है और यही मनुष्य की अंदरूनी क्षमता की विशेषता है कि वह लोगों के साथ भाईचारा और प्रतिस्पर्धा के संबंधों के साथ रहता है। शेफर (1991) "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा आदमी अपनी जरूरतों और परिस्थितियों के मध्य संतुलन कायम करता है।" न्यूमैन एंड न्यूमैन (1981) "प्रभावपूर्ण रहने के ढंग को समायोजन कहते हैं जिसके अन्तर्गत हमें अपनी दैनिक जीवन की जरूरतों को नियन्त्रित रखना चाहिए और लोगों व स्थान के विशय में सही निष्कर्ष लेने चाहिए।" अगर व्यक्ति समाज, परिवार आदि के साथ तालमेल करके नहीं रख पाता है तो उसे कुसमायोजन कहा जाएगा। यदि विद्यार्थी वातावरण के साथ, दोस्त, विद्यालय, समाज आदि के साथ तालमेल नहीं रख पाता है तो उसे कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिससे उसकी शैक्षिक-उपलब्धि प्रभावित होती है।

तालुकदार एवं तालुकदार (2008) के अनुसार "समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम लोगों और वातावरण के साथ भाईचारा और तालमेल के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। साथ ही अपने आपको वातावरण के अनुरूप ढालता और अपने में परिवर्तन करता है जिससे व्यक्ति विशेष और वातावरण के साथ संतुलनपूर्ण परिणाम निकाल सके। अर्थात् भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति अपने आपको चतुराई से ढाल सकता है उसे समायोजन कहते हैं। यह मनुष्य की काबिलियत/समझ होती है कि वह तनावपूर्ण माहौल को कैसे नियंत्रित करता है।

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अपनी जरूरतों और रुकावटों के साथ संतुलन बनाते हैं। सुब्रह्मणियम (1986) के अनुसार "जो विद्यार्थी अपने आपको समायोजित नहीं कर पाता है अर्थात् कुसमायोजित होता है उसकी उपस्थिति कक्षा में कम होने लगती है और उसी शिक्षा का स्तर भी गिरने लगता है इसके साथ ही विद्यार्थी में कई बुराइयाँ जन्म लेने लगती हैं।" मंजु गहलावत (2011), गनई (2013) के शोध निष्कर्षों में पाया कि लड़के और लड़कियों के समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे संवेगात्मक, घर, स्वास्थ्य, सामाजिक, शैक्षिक और पूर्ण समायोजन में कोई अन्तर नहीं पाया गया। जबकि येल्लाही (2012) के

अध्ययन परिणामों में लड़के व लड़कियों के समायोजन और शैक्षिक-उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। रश्मिकान्त परमार (2014) के शोध निष्कर्षों को देखने से पता चलता है कि घरेलू समायोजन में दसवीं कक्षा के शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों में अन्तर पाया गया जबकि शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन और संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई अन्तर नहीं पाया गया। शाह, बीना (1989) ने किशोरों के घरेलू समायोजन में पारिवारिक वातावरण के प्रभाव के अध्ययन में स्पष्ट किया है कि संतोषजनक पारिवारिक वातावरण वाले ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों का पारिवारिक समायोजन असंतोषजनक पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों से अच्छा है। रेड्डी (1969) ने पारिवारिक आय और किशोरावस्था में समायोजन के अध्ययन के लिए 14 से 20 वर्ष तक के स्कूल व महाविद्यालय जाने वाले 619 विद्यार्थियों का चयन किया। शोध निष्कर्षों में पाया कि विद्यार्थियों में उच्च और मध्य आय वाला समूह निम्न कुसमायोजित पाया गया और विद्यार्थियों का जो समूह निम्न आय वाला था उसमें हीन भावना और माता-पिता से कमजोर संबंध पाए गए। तालुकदार एन.एन. और तालुकदार एम.सी. (2008) ने कक्षा 11वीं और 12वीं के 100-100 विद्यार्थियों (16से 19) की समायोजन समस्या पर शोध कर निष्कर्ष पाया कि लड़कियों की तुलना में लड़कों का पूर्ण समायोजन बेहतर पाया गया। विद्यार्थियों (लड़के, लड़कियों) का सामाजिक समायोजन सामान्य पाया गया। दोनों समूह में संवेगात्मक समायोजन असंतोषजनक पाया गया। "लड़के और लड़कियों की युवावस्था में वंशानुगत परिवर्तन और समझदारी का समय अलग-अलग होता है। समाज के रीति-रिवाज के तौर तरीके भी लड़के-लड़कियों के लिए भिन्न-भिन्न होते हैं इसीलिए उनका समायोजन स्तर भी अलग-अलग होता है" (कुरुविला 2006, शालू और औडिछाया 2006)। "परिवार का मिलना-जुलना और परिवार के साथ संबंध युवा विद्यार्थियों को समाज में समायोजित करने में मुख्य भूमिका निभाता है" (कौनार 1997, वार्नर 2003)। प्रधान (1992) व राजू और रहमतुल्लाह (2007) के अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट है कि "किशोर विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में स्कूलों के प्रकार और स्कूलों के माध्यमों (हिन्दी व अंग्रेजी) का प्रभाव होता है।"

**अध्ययन के उद्देश्य :-** वर्तमान अध्ययन हेतु उद्देश्य निम्नवत् हैं—

1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक-उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
3. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक-उपलब्धि पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना।

### परिकल्पना —

**H<sub>1</sub>** बी.एड. के पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक-उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

**H<sub>2</sub>** बी.एड. के पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**H<sub>3</sub>** बी.एड. के पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक-उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध विधि—**

वर्तमान अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए हेतु देहरादून जनपद में स्थित बी. एड. प्रशिक्षण संस्थाओं में से न्यादर्श के तौर पर 100 प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। जिसमें 50 पुरुष व 50 महिला प्रशिक्षणार्थी थे।

**शोध उपकरण एवं आकड़ों का विश्लेषण—**

अध्ययन के लिए शैक्षिक—उपलब्धि हेतु बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों को लिया गया है। जबकि समायोजन के लिए प्रो. ए. के. सिन्हा एवं प्रो. आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित एडजेस्टमेंट इन्वेन्ट्री फार कॉलेज स्टूडेंट्स का प्रयोग किया गया है। इस अनुसूची में घर, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक विमाओं से सम्बन्धित क्रमशः 16, 15, 19, 31, और 21 पद थे जिनके उत्तर हाँ या नहीं संकेत सूचक द्वारा देने थे। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकीय तकनीक के अन्तर्गत माध्य, मानक विचलन, टी—मूल्य का प्रयोग किया गया है।

**परिकल्पना संख्या—**

**H<sub>1</sub>- बी.एकू के पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका संख्या— 01****पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि के मध्य सार्थकता अन्तर**

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	शैक्षिक—उपलब्धि का मध्यमान	मानक विचलन	टी—मूल्य	सार्थकता स्तर
पुरुष	50	384.36	24.91	8.7	**सार्थक
महिला	50	424.78	21.82		

\*\*0.05 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिका संख्या—01 से स्पष्ट है कि पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 384.36 तथा 424.78 है। जिससे स्पष्ट है महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि पुरुष प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है तथा टी—मूल्य का मान 8.7 है। जिसको 0.05 की सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है। जिससे स्पष्ट है कि पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः परिकल्पना संख्या १ को अस्वीकृत किया जाता है।

**H<sub>2</sub>- बी.एकू के पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका संख्या — 02****पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन के मध्य सार्थकता का अन्तर**

क्रम संख्या	समायोजन की विमाएं	लिंग	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	घर	पुरुष	50	3.4	1.939	1.60	*असार्थक
		महिला	50	2.8	1.692		
2.	स्वास्थ्य	पुरुष	50	3.6	2.271	1.30	*असार्थक
		महिला	50	4.2	2.398		
3.	सामाजिक	पुरुष	50	7.2	5.510	0.49	*असार्थक
		महिला	50	7.8	6.516		
4.	संवेगात्मक	पुरुष	50	11.3	5.103	1.76	*असार्थक
		महिला	50	13.1	5.401		
5.	शैक्षिक	पुरुष	50	5.2	4.535	1.18	*असार्थक
		महिला	50	6.1	2.932		
6.	पूर्ण समायोजन	पुरुष	50	30.86	11.26	1.31	*असार्थक
		महिला	50	33.72	10.54		

\*0.05 स्तर पर असार्थक,

तालिका संख्या—02 से विदित है पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन की विमाओं—घर (पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 3.4 व महिला प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 2.8 तथा टी—मूल्य 1.60), स्वास्थ्य (पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 3.6 व महिला प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 4.2 तथा टी—मूल्य 1.30), सामाजिक समायोजन (पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 7.2 व महिला प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 7.8 तथा टी—मूल्य 0.49), संवेगात्मक समायोजन (पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 11.3 व महिला प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 13.1 तथा टी—मूल्य 1.76), शैक्षिक समायोजन (पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 5.2 व महिला प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 6.1 तथा टी—मूल्य 1.18) तथा पूर्ण समायोजन (पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 30.86 तथा महिला प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 33.72 तथा टी—मूल्य 1.31) के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना संख्या 02 को स्वीकार किया जाता है अर्थात् पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन की विमाओं के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। इससे स्पष्ट है समायोजन की विमा—स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक और पूर्ण

समायोजन में पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का समायोजन महिला प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा उत्तम पाया गया क्योंकि अध्ययन में प्रयुक्त समायोजन अनुसूची की अंकन विधि और विश्लेषण के आधार पर उच्च प्राप्तांकों वाले विद्यार्थियों को निम्न समायोजित तथा निम्न प्राप्तांकों वाले विद्यार्थियों को उच्च समायोजित माना जाता है। जबकि महिला प्रशिक्षणार्थी घर समायोजन में पुरुषों से उत्तम पायी गयी हैं। आरती (2009) तथा संगीता (2012) ने इस तथ्य की पुष्टि की है कि लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को समायोजन करने में कम समस्याएं आती हैं और जो विद्यार्थी उच्च शैक्षिक—उपलब्धि वाले होते हैं उनको समायोजन करने में कम समस्याएं आती हैं।

**H<sub>3</sub>- बी.एकू के पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका संख्या—03****पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सार्थकता का अन्तर**

क्रम संख्या	क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी.मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	शैक्षिक उपलब्धि	100	393	402.54	8.9	**सार्थक
2.	पूर्ण समायोजन	100	32.29	12.47		

\*\*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या—03 से स्पष्ट है कि पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि का मध्यमान 393 तथा पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों के पूर्ण समायोजन का मध्यमान 32.29 तथा टी. मूल्य 8.9 के आधार पर स्पष्ट है कि पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि व पूर्ण समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है। जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या—03 को 0.05 की सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है।

**निष्कर्ष—**

उपरोक्त तालिका संख्या—01 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है। जिससे स्पष्ट है महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि पुरुष प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है। अतः परिकल्पना जाँच के आधार पर अस्वीकृत की जाती है। इसकी पुष्टि सुभाष (2009), सुरेश (2014) तथा तवियाद (2014) द्वारा भी की होती है।

तालिका संख्या—02 से स्पष्ट है कि पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन की विमाओं— घर, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक समायोजन और पूर्ण समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। इसकी पुष्टि मुकेश भट्ट (2012), थॉमस आदि (2006), परमार गिर (2012) ने भी की है।

तालिका संख्या—03 में पुरुष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक—उपलब्धि एवं पूर्ण समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः परिकल्पना जाँच के आधार पर अस्वीकृत की जाती है। मारिया चौग (2010) ने शैक्षिक—उपलब्धि और समायोजन के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध पाया।

आकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि विद्यार्थी का शैक्षिक प्रदर्शन व उसकी योग्यता पूर्ण रूप से उसके समायोजन पर निर्भर करती है। अगर विद्यार्थी घरेलू समायोजन, स्वास्थ्य, संवेगात्मक, सामाजिक व शैक्षिक समायोजन करने में समर्थ है तो उसका शैक्षिक प्रदर्शन भी उत्तम होगा अन्यथा वह कुसमायोजित श्रेणी में रहेगा। वर्तमान अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों के आधार पर ज्ञात तथ्यों की सार्थकता धनात्मक है तथा पारिवारिक वातावरण किसी भी विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि में सहायक सिद्ध होंगे तथा अभिभावक, शिक्षक तथा नीति निर्धारकों के लिए सहायक सिद्ध हो सकते हैं, जिनका विवरण निम्नवत् है—

- छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं को सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भागीदारी लेना चाहिए तथा सामंजस्यपूर्ण वातावरण का निर्माण करके शैक्षिक—उपलब्धि को बढ़ाना चाहिए। छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं को समायोजन में वृद्धि करने हेतु वातावरण की सकारात्मक समझ को विकसित करना चाहिए। इस बात की पुष्टि इदोह ओसा (2012) और निर्मला देवी (2011) द्वारा भी होती है।
- अभिभावकों को घर में उपयुक्त, अनुकूल, सकारात्मक व सामंजस्यपूर्ण वातावरण का निर्माण करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए जिससे असंतोषजनक समायोजन व निम्न शैक्षिक—उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान किया जा सके। दौलता (2008) के अध्ययन से स्पष्ट है कि पारिवारिक वातावरण का लड़के—लड़कियों की शैक्षिक—उपलब्धि से सकारात्मक संबंध होता है।
- शिक्षकों को असंतोषजनक समायोजन वाले छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करना चाहिए जिससे उनकी समायोजन सम्बन्धी समस्या का निदान करके शैक्षिक—उपलब्धि को बढ़ाया जा सके। साथ ही पाठ्य-सहायगी क्रियाओं में प्रशिक्षणार्थियों की सहभागिता को सुनिश्चित करे

जिससे उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलेगी।

अतः आवश्यक है कि शिक्षक-प्रशिक्षण के चयन के मानकों में परिवर्तन कर स्वस्थ प्रशिक्षणाथियों का चयन किया जाए जिससे वह व्यक्तिगत जीवन, समाज तथा विद्यालय के साथ सफलतापूर्वक समायोजन करके शिक्षण व्यवसाय को अपना सके।

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Abdullah, M. C., Elias, H., Uli, J., & Mahyuddin, R. (2010), Relation between coping and university adjustment and academic adjustment amongst First Year undergraduates in a Malaysian Public University. *International Journal of Arts and Science*. Retrieved on January 01, 2015 at 9:50am. from [http://openaccesslibrary.org/images/LVG163\\_Maria\\_Chong\\_Abdullah.pdf](http://openaccesslibrary.org/images/LVG163_Maria_Chong_Abdullah.pdf)
2. Bhatt, M. (2012). A study of adjustment of college students in relation to certain variables in Surat District. *Quest International multidisciplinary research journal*. Vol.1, Issue – II
3. Conger, K.J., Conger, R.D., & Scaramella, L.V. (1997). Parents, sibling, psychological control and adolescent adjustment. *Journal of Adolescence Research*, 12(1): 113-138.
4. Daulta, M. (2008). impact of Family Environment on the Scholastic Achievement of Children, Retrieved on Nov. 22, 2014 at 9:20pm. from [www.krepublishers.com/02Journals/JHE-23-8-000-000-2008-web/JHE](http://www.krepublishers.com/02Journals/JHE-23-8-000-000-2008-web/JHE)
5. Devi, N. (2011). A Study of Adjustment of Students in Relation to Personality and Achievement Motivation. *Bhartiyam International Journal of Education and Research*. Retrieved on November 22, 2014 at 5:55pm. from [gangainstituteofeducation.com/bhartiyamjournal/astudyofadjustmentofstudentsrelation.pdf](http://gangainstituteofeducation.com/bhartiyamjournal/astudyofadjustmentofstudentsrelation.pdf)
6. Edoh, O.G.I., & Iyamu, F.I. (2012). Social life adjustment and academic achievement of adolescents in Edo State: Implication for counselling. *Ozean Journal of Applied Sciences*. Retrieved on January 07, 2015 at 9:47am. from [ozelacademy.com/6](http://ozelacademy.com/6)
7. Ganai, M.Y. & Mir, M.A. (2013). Comparative studies of adjustment and academic achievement of college students. *Journal of Education Research and Essays* vol. 1(1), pp.5-8.
8. Gira, P. B. (2012, June). A study of adjustment of the secondary school students. *International Indexed & Referred Journal*. Retrieved on January 05, 2015 at 9:15pm from [www.ssmrae.com/admin/images/of5b1a5bed\\_be62bb65109e8/e58843are.pdf](http://www.ssmrae.com/admin/images/of5b1a5bed_be62bb65109e8/e58843are.pdf).
9. Gehlawat, M. (2011, Oct.). A study of adjustment among high school students in relation to their gender. *International Referred Research Journal*. Retrieved on January 06, 2015 at 7:20am. From [www.ssmrea.com/admin/images/ea743a87570d83174c2355498c178.pdf](http://www.ssmrea.com/admin/images/ea743a87570d83174c2355498c178.pdf).
10. Gupta, A. (2009). A study of adjustment & academic performance & the children of leprosy patients, *Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Shantikunj, Haridwar (uttrakhand)*
11. Kuruvilla, M. (2006). Sex and locate difference in emotional adjustment problems of adolescent. *J comm.. Guid. Res.* 23(3): 285-291.
12. Mansingbhai, T. S. & Patel, Y. B. H. (2014). Adjustment and achievement of higher secondary school student. *Journal of Information, Knowledge and Research Humanities and Social Science*, Retrieved on January 29, 2016 at 7:13pm. from [www.ejournal.aessangli.in>HSS37](http://www.ejournal.aessangli.in>HSS37)
13. Newman, K., & Newman, L. (1981). *Educational Psychology*. Mohi Publications. New Delhi.
14. Parmar, R.N. (2014, Feb.). A study of certain area of adjustment of higher secondary schools students in relation to habitat. *International Journal for Technological Research In Engineering*. Retrieved on Jan.05, 2015 at 9:20pm. from [manuscriptijtre-archives.rheloud.com](http://manuscriptijtre-archives.rheloud.com)
15. Pradhan, G.C. (1992) Values pattern of school students as a function of type of school and levels of intelligence. *The Educational Review*, XCI, 133 – 136.
16. Rajkonwar, S., Dutta, J., & Soni, J.C. (2014) A study of adjustment, level of aspiration, self-concept and academic achievement of visually handicapped school children of Assam. Retrieved on March 11, 2016, at 11:08pm. from <http://www.ijsr.net>
17. Raju, M.V.R., & Rahamtulla, T.K. (2007) Adjustment problems among school students. *Journal of the Indian Academy of applied Psychology*, Vol. – 33, No.1, 73 – 79.
18. Reddy, N.Y. (1969) Family income and adolescent adjustment research bulletin, Department of Psychology. Osmania University 5, 35- 43. Retrieved from *Indian Psychology Abstracts*, (7), 126, 1975.
19. Shaffer, D.R. (1991). *Developmental Psychology: Childhood and Adolescence*, New Atlantic Publisher, New Delhi.
20. Shah, B. (198) Home adjustment of adolescent students effect of family climate. *Fifth Survey of Educational Research : 1988 -1992 (Vol. II)*. National Council of Educational Research and Training. New Delhi.
21. Shalu and Audichaya, S. (2006) A study on social adjustment of rural adolescents. *Ind. Psych. Rev.*, 66(2): 93 -96.
22. Talukdar, N.N., & Talukdar, M.C. (2008). Adjustment problems of adolescent students. *Journal of Community Guidance and Research*, 25 (3), 269 – 271. [www.britannica.com/topic](http://www.britannica.com/topic).
23. Werner, N.E. and silbereisem, R.k. (2003) Family relationship quality and contact with deviant peer as predictors of adolescent Problems behaviours : The moderating role of gender. *Journal of Adolescent Research*, 18 (5): 454-480.
24. Yellaiah (2012, May), A study of adjustment on academic achievement on high school students. *International Journal of Social Science and Interdisciplinary Research*. Retrieved on November 20, 2014 at 7:50pm. from [www.indianresearchjournal.com/pdf/IJSSIR/2012/May/12-IJS-MAY2012.pdf](http://www.indianresearchjournal.com/pdf/IJSSIR/2012/May/12-IJS-MAY2012.pdf)
25. कोल, लोकेश, (2013), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा० लि. नोएडा (यू. पी.)
26. मंगल, एस०के० (2014), शिक्षा मनोविज्ञान, च० लर्निंग प्रा० लि०, दिल्ली।
27. सुभाष कुमार (2009) उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की अधिगम की समस्याओं में शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनकी अधिसहन आदत, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन। चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, पी.एच.डी.उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध।